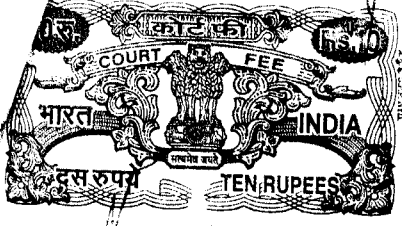




अपील प्रकरण क.

प्रस्तुति दिनांक 23/04/2014



माननीय बोर्ड ऑफ़ रेवेन्यू, ग्वालियर

कैम्प-इंदौर

R-1357-PBR/14

पार्श्व रायल डेवलपर्स तर्फे भागीदार

- 1) श्री प्रेमकुमार पिता गाणकचंद डुंगरवाल
- 2) श्री देवेन्द्रकुमार पिता प्रेमकुमार डुंगरवाल
- 3) श्रीमती शालीनी पति श्री देवेन्द्रकुमार डुंगरवाल
सभी निवासी 35, तिलक नगर,
इंदौर

विरुद्ध

- 1) म.प्र. शासन तर्फे
कलेक्टर ऑफ़ स्टॉम्प, इंदौर
- 2) श्रीमती शांताबाई पति श्यामलाल
निवासी ग्राम सनावदा, तहसील व जिला इंदौर
- 3) श्रीमती सरजूबाई पति अंतरसिंह
निवासी ग्राम मूरखेडा, तहसील देपालपुर,
जिला इंदौर

183
23/04/2014अपीलार्थीगण

श्री. के. सी. मरुत
पार्थी/अभिभावक द्वारा दिनांक 23/04/2014
को प्रस्तुत

प्रतीपार्थीगण

.....प्रतिपार्थीगण

अपील अंतर्गत धारा 56 भारतीय स्टेम्प एक्ट, 1899

मान्यवर,

कलेक्टर ऑफ़ स्टॉम्प, इंदौर द्वारा उनके न्यायालयीन प्रकरण क्रमांक 135-बी/103/08-09 में पारित आदेश दिनांक 29/05/2009 से असंतुष्ट व दुखित होकर उसे निरस्त करते हुए यह अपील सादर प्रस्तुत है :-

न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश—ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक R 1357-PBR/2014

जिला इंदौर

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
16-7-2014	<p>आवेदकगण के विद्वान अभिभाषक द्वारा ग्राह्यता पर प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया गया । कलेक्टर ऑफ स्टाम्प के आदेश दिनांक 29-5-2009 की सत्य प्रतिलिपि का अवलोकन किया गया। आवेदकगण की ओर से कलेक्टर ऑफ स्टाम्प के आदेश दिनांक 29-5-2009 के विरुद्ध यह निगरानी 3-4-2014 को लगभग 5 वर्ष विलंब से प्रस्तुत की गई है । इस संबंध में आवेदकगण के विद्वान अभिभाषक द्वारा प्रस्तुत यह तर्क मान्य किये जाने योग्य नहीं है कि कलेक्टर ऑफ स्टाम्प द्वारा उनके समक्ष प्रचलित प्रकरण में आवेदकगण को सूचना नहीं दी गई और एक पक्षीय आदेश पारित किया गया है इसलिये उन्हें कलेक्टर ऑफ स्टाम्प के आदेश की जानकारी नहीं हो सकी । कारण कलेक्टर ऑफ स्टाम्प द्वारा अपनी आदेशिका दिनांक 20-5-2009 में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि आवेदकगण को रजिस्टर्ड ए0डी0 से सूचना दी गई और सूचना पत्र तामीली उपरान्त भी किसी के उपस्थित नहीं होने के कारण उनका पक्ष समाप्त किया जाता है । अतः विलम्ब का कारण समाधानकारक नहीं बतलाये जाने के कारण यह निगरानी प्रथम दृष्टया अवधि बाह्य मान्य की जाकर अग्राह्य को जाती है ।</p>	

(स्वदीप सिंह)
अध्यक्ष